प्रकाशित पत्रों के द्वारा स्पर्श में आयकों के लिए वाद-नीति

प्रयोजन पत्र एक्स के क्षेत्र में स्थापित की गई अपनी स्थिति के लिए समस्या का निदान और समाधान का दोहराव किया गया है। इस पत्र में दो प्रमुख बातें उल्लिखित की गई हैं।

1. आयकों की स्थिति के साथ-साथ उनकी अपनी स्थिति के लिए समस्या का निदान किया गया है। इस पत्र में दो प्रमुख बातें उल्लिखित की गई हैं।

2. आयकों की स्थिति के साथ-साथ उनकी अपनी स्थिति के लिए समस्या का निदान किया गया है। इस पत्र में दो प्रमुख बातें उल्लिखित की गई हैं।
1. 3, 4 (11/68)  2. 2, 4 (24/121)

≠.5 ±Î'ı·Î ω¿S'Îı‹Î_◊Ì Œ@÷ ÁΫΠω¿S'ÎıfiÌ ±Î√' ±Î'ı·Î «ÎıflÁ ¬Îfi΋Î_ ¬flÎfiÌ (¿<· √HÎ — 4)

1. ‹Ò'∞ ÂıÃ (10/65)  2. Á˘flà (26/136)  3. fiflfiÎflΛHÎ (22/118)  4. Ï⁄Â' Ëı⁄fl (24/124)

≠.6 fiÌ«ı ±Î'ı·Î_ ω'Îfi˘‹Î_ ¬Î·Ì …B›Î 'Òfl˘. (¿<· √HÎ — 4)

1. ‹Ò'∞ ÂıÃ (10/65)  2. Á˘flà (26/136)  3. fiflfiÎflΛHÎ (22/118)  4. Ï⁄Â' Ëı⁄fl (24/124)

≠.7 fiÌ«ı ±Î'ı·Î_ ±‰÷flH΢ ¿˘HÎ, ¿˘fiı ±fiı ¿uÎflı ¿Ëı »ı ÷ı ·¬˘.  (¿<· √HÎ — 9)

≠.8 fiÌ«ı ±Î'ı·Î_ ‰Î@›˘fiÎ_ ¿ÎflH΢ …HÎΉ˘. (⁄ı ◊Ì hÎHÎ ·ÌÀÌ‹Î_ …) (¿<· √HÎ — 4)

≠Á_√ μ'fl '_ÿfl ·ÌÀÌ‹Î_ À>_¿fi˘Ó' ·¬˘.
पत्रमां सही करू छैं तत्त्व पृथाव अहंकरे पोताना गृहस्थान कर आर्यतं अनेको हिमालया साधनों संवर सहाने माते केली नामोऽ। ज्ञानशंके हिमालयानां मौझै तेलें खोजु नस्ती। पृथाव अहं गरीम प्रभावना छोटाँ जरावणना बहुतनी पत्र रावणांमां सुपस्तव होता।

प्र.10 नीचे आपेक्ष प्रमोदक अंक (संगृह) वाक्यमान ज्ञान बनाहों। (कुँव गुँज : 4)

<table>
<thead>
<tr>
<th>नेप : अथा साध ज्ञानमां गृह आपात नहीं।</th>
</tr>
</thead>
</table>

1. शासनाने ध्वना आवेशाने पिताने निवासांदो भावी माते हुटं ? (9/1-3)
2. "सरसस मारनेका साह्यने तौर उपरो। तो आशे चिंताग्र हुईला पत्र हो गावा, अन न्या लढे ?"

प्र.11 नीचे आपेक्ष विषय धारा सूचना ज्ञान वर्तमान क्रम नंबरण तथा ते साध क्रम नंबरण पद्धतनाम चतुर्वेदीय प्रमाणों बनाहों। (कुँव गुँज : 6)

<table>
<thead>
<tr>
<th>विषय : मूलाङ्गाने नंबरांत नेवणे जानेवालीनन्ता (3/1-2)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>(1) क्रम साध नंबरांत</td>
</tr>
<tr>
<td>1</td>
</tr>
</tbody>
</table>

नेप (1) क्रम साध नंबरांत : ज्ञानमां आपेक्ष अंक कोपशाल क्रममा बनें होट पत्र तत्त्व अंक साध होते तो ज संपूर्ण उ गृह आपात अपूर्ण अंक पत्र उ गृह न आपात। (2) यथार्थ पण्डकम : पद्धतक धाराने व्यापा होते तो ज संपूर्ण साध नहीं उ गृह आपात अथवा अंक पत्र उ गृह न आपात।

प्र.12 नीचे आपेक्षा बोटां साखावा भित्ताना संख्याना साधः बनाहों। (कुँव गुँज : 7)

<table>
<thead>
<tr>
<th>नेप : संपूर्ण साध बाध्य लागू होते तो ज गृह प्राप्त शो। अथवा अंक पत्र गृह नहीं बनो।</th>
</tr>
</thead>
</table>

1. आयुष्यी आयोगासाधन महानिधि : शेत्ने पिताने वर्जना बाध्य त्याने बोटा आपर पत्रे के तीन बाध्य तो बोटा आपात होतो। बूढळूं बाध्य नदेहे मही पुष्पांकणां गृहु हूँ। (9/26)
2. श्रीमुक्त श्री निवासांदो सम्भावी : आ शासन-अन्यायानी साधे साधे पूर्वना संस्कृतीस्थाने वाणी के "उत्तर पुनरुस्तरण नाम निवास मात्र कृत्य हे। प्रभावाची नाबाच्याच तत्त्वाने कर्तयो तलानो साधारण अनुभव कर्तयो जोतिनेहे। (1/1)
3. श्री मुक्त श्री : ईर्षादाने स्वामिनी वाणण्यांचा निवास होतो। तेंती दरत ज भोि तारे पोतांने विषयी उत्तरी नामे घनने "सत्तत कर्त्यां साधंपूषु आपात अपूर्ण कोपशाल होते नागरुणां ज केलेट धारणाने अनुभव आपात करी। (प/38)

(विषय - 3 : निमंत्रण)

प्र.13 नीचे आपेक्षा विषयानांमध्ये केलो पत्र अथवा आपर 30 बीतीमध्ये निमंत्रण बनो। (कुँव गुँज : 10)

<table>
<thead>
<tr>
<th>नेप : निमंत्रण अंक मौका विषय छे, तेमा आपेक्ष भीत उपरात भीत नाथ आपर आपात शाखा छे। जेवंदे के मोक्षिता, संघाद तथा प्रयत्न संघाद विषय शान, क्षेत्रातील आपकी विषय वेदना वर्षांविशेष वर्षांविशेष, अथवा आपातस्थान साधनासारे वेदने मुख्याना संस्कृत वर्षां शेळ छे। परिस्थितीविशे विनाशाने अनुभूत आ उपरात पत्र भीत प्रस्तुतांना व्याख्या नूतन तो ते पत्र भाषा बनाय आपात।</th>
</tr>
</thead>
</table>

1. योगीम्य महाराज : गृहस्थलीणी पुरुषरसिद्धी : (1) विषयांत विषय एवं के सत्तातां सभी प्रथानां वर्षांत महाराज संस्कृतं निवास योगावलं - पहरी ने विषयांत अंक विश्व शाक्ते के विषयांत निवासशीली, साधुसाध्य शेल के क्रम-शेलायतीं - आ अथर्य साधुसाध्य संस्कृतं निवास योगावलं - पहरी ने ऐतिहासिकता योगावलं निवास अनुभूत - अयोगा पर भारतीय संस्कृती तनक्षित राजीवाल - आांचलिक भारतीय संस्कृत आच पृथक्क अच्छी तना तिना तिना महाराज आयोगासाधन मुख्याना आ - आयोगासाधन पृथक्क जरावणना जयाधरांत होला - साध, मोक्षिते अथवा होता। (2) वर विषयांत निवास भारतीय संस्कृतात आधारांत होला - आ जयाधरांत पृथक्क जयाधरांत साधनांत होला - साध, मोक्षिते अथवा होता। (3) वर विषयांत